प्रातःक्लास ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद हैं? 12.2.68

ओमशांति। रुहानी बच्चों को रुहानी (बाप) बैठ समझाते हैं। अभी यह तो बच्चे समझ गए हैं सृष्टि का उपर जाना और नीचे आना होता है। इनका भी एक चित्र युक्ति से बनाना चाहिए। बच्चे तो समझते हैं हम अभी उपर जा रहे हैं। सतयुग से त्रेता तक उपर ही रहते हैं। फिर नीचे उतरते हैं। यूं तो शुरू से ही नीचे आते हैं। बहुत धीरे2। चढ़ते तो फौरन हैं। जैसे मच्छलियों की तार होती है ना उतरती है और चढ़ती है। तुम बच्चों की बुद्धि में यह हमेशा रहनी चाहिए हम उपर जा रहे हैं। हमारा घर तो उपर है ना। रचना के आदि,मध्य,अंत को जान गए हैं। आदि उंच को कहा जाता है। मध्य बीच को कहा जाता है। अंत नीचे को कहा जाता है। यह सृष्टि चक्र भी ऐसे ही फिरता रहता है। गोल चक्र है ना। सतयुग से त्रेता ,फिर द्वापर से कलियुग आता है अर्थात् स्वर्ग से फिर नर्क में आते हैं। अभी फिर हमको उपर जाना है। नंगे आये थे, नंगे जाना है। यह उपर जाने और नीचे आने की एक कहानी है। दो अक्षर ही याद रहनी है। तुम राम का भी चित्र दिखाते हो। रावण का भी चित्र दिखाते हों जैसे मनुष्य मुर्दे को श्मशान में ले जाते हैं तो पहले माथा शहर तरफ ,पांव श्मशान तरफ होता हैं। फिर जब श्मशान के नजदीक आते हैं तो बदल कर पैद शहर तरफ, माथा शमशान तरफ करते हैं। वैसे ही तुमको भी ऐसा ही चित्र बनाना चाहिए। रावण सम्प्रदाय का सिर नीचे हो, नीचे गिरते जाते हैं। स्वर्ग में जाने वालों का सिर उपर। समझाया भी जाता है अल्ला के बच्चे अल्ला ही होते हैं। फिर उल्लू के बनते हैं तो उल्टा लटक पड़ते हैं। उल्लू का सिर नीचे, टांग उपर लटक पड़ते हैं। उनकी आंखें दिन में बंद, रात को खुलती हैं। नाम ही है उल्लू। भारत में ही जास्ती उल्लू होते हैं। मनुष्य भी भारत में ही जास्ती उल्लू बन जाते हैं। तुम कितना अच्छा समझाते हो। यह शास्त्र आदि तुम्हारी रांग है। मनुष्य किसके बायोग्राफी से ऐसी भूल नहीं करते, जो बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दे। अभी बाप बैठ (समझाते) हैं गीता का भगवान निराकार भगवान है , न कि मनुष्य। सो भी पूरे 84जन्म लेते हैं। पुनर्जन्म तो सभी लेते ही हैं। कोई तो सबसे जास्ती भी लेते होंगे। यह हिसाब–किताब भी कोई जानते नहीं हैं। कितने बड़े2 एप्स हैं। समझाने से भी समझते नहीं। और गुरर–गुरर करते हैं। बच्चे भी अभी छोटे हैं। गोद में बैठाने लायक हैं। पैदल चलने जैसे भी नहीं हैं। बाबा ने कितना बार समझाया है तुम शंकराचार्य को चिट्ठी लिख सकते हो पुजारी से पूज्य बन कैसे सकते। कितनी सहज बात है ;परंतु तुम्हारे दुश्मन हैं सब ; क्योंकि तुम जानते हो कि हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाकी सभी का विनाश होना ही है ड्रामाप्लैन अनुसार। बाप को बुलाते ही हैं पावन दुनियां स्थापन कर बाकी सभी को खतम कर दो। खात्मा भी खुद ही मांगते हैं। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। पतित–पावन को बुलाते हैं तो जरूर भगवान आवेगा तो अनेकों का विनाश भी तो होगा ना। यह भी नहीं समझते हैं। वंडर है ना। इसलिए पत्थर बुद्धि कहा जाता है। नई दुनियां को कहा जाता है गोल्डेन एज। पुरानी दुनियां को आयरन एज। पारसनाथ नाम है तो पत्थरनाथ भी तो होते हैं ना। पवित्र को पारसनाथ ,पतित को पत्थरनाथ कहा जाता है। कितनी अच्छी2 बातें हैं फिर भी समझते नहीं। तुम बड़े2 आदमियों को बुलाते हो और ही अहंकार में आकर बात करते हैं। समझते हैं इन्होंने हमको मान देकर बुलाया है। बुलाने वाले जरूर छोटे आदमी ठहरे। उन्हों की दृष्टि ऐसी रहती है। कोई2 सुनने समय कहते भी हैं समझाते तो बहुत अच्छा हैं ;परंतु घर गए ,खलास। कांटों को फूल बनाने में कितनी मेहनत लगती है। इसलिए एक ही बाप है जो सर्वसमर्थ है। उनको आना पड़ता है। चाहते भी हैं रामराज्य हो ;परंतु अपन को रावणराज्य वाले समझाते थोड़े ही हैं। कोई कहते हैं राक्षस राज्य है ;परंतु रामराज्य किसको कहा जाता है बुद्धि में नहीं आता। नई दुनियां स्वर्ग, पुरानी दुनिया नर्क किस चीज़ का नाम है यह किसको पता नहीं है। ऐसे2 मनुष्यों की बुद्धि को बाप बिगर कौन पलटाये? बाप ही सर्वशक्विान है। बाप फर्स्टक्लास पारसबुद्धि बनाते हैं। फिर रावणराज्य में पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठ सकता। तुम्हारी बुद्धि में अभी यह बातें हैं। तो यह नालेज सदैव बुद्धि में

टपकनी चाहिए। यह खजाना ही तुमको साथ ले जाना है। खजाना होगा तो साथ ले जावेंगे। आत्मा में धारणा चाहिए। यहां बैठे भी बुद्धि से समझते हैं हम अभी उपर बाप के पास जा रहे हैं। फिर वाया मूलवतन आवेंगे। यह भी वाया होकर आवेंगे। प्रजा भी आवेंगे। अभी सारा होललाट वापस जाना है। अभी तुम बच्चों को बाप को भी याद करना है। दैवी गुण भी धारण करने हैं। कई तो यह भी नहीं समझते हैं दैवीगुण किसको कहा जाता है। आसुरी गुणों का शो करते रहते। यहां नशा चढ़ता है। घर में गए खलास। फिर बाल–बच्चे आदि याद आ जाते। बाप तो कहते हैं इस शरीर को भी भूल जाओ बुद्धि से। खाओ–पीओ भले, बुद्धि से बाप को याद करो। कम कार डे.....भक्तिमार्ग में भी बहुत अच्छे2 अव्यभिचारी भक्त होते थे। एक के सिवा और कोई की याद नहीं। पहले2 तो तुम एक की अव्यभिचारी एक शिव की पूजा करते थे ना। बहुत याद करते थे। एक शिव की ही मूर्ति थी। और कुछ नहीं था। उनको ही अव्यभिचारी पूजा कहा जाता है। शिव को ही याद करते हैं। ताकत भी मिलती थी। फिर देवताएं आदि को याद करने लगे। वृद्धि को पाते गए। पहले तो एक ही शिव था ;क्योंकि इस समय अंत में तुमको शिवबाबा ही वर्सा देते हैं। तो जरूर उनकी शुक्रिया माननी चाहिए ना। भक्तिमार्ग में पहले तो तुम ही थे। फिर इस्लामी आये। वह तो उस तरफ के ठहरे। शिवबाबा की भक्ति तुम ही करते थे। दूसरे तो बाद में शुरू होते हैं जबकि वृद्धि को पावें। राजाई चेले पीछे शुरू करते हैं। तब तक तुम हो शिव की पूजा करते हो। और कोई का चित्र हो, कायदा नहीं। एक ही की अव्यभिचारी पूजा करते थे। बाप कहते हैं जैसे एक ही भक्ति करते थे वैसे तुम एक मुझे ही याद करो तो विकर्म विनाश हो। तुम मेरे बच्चे मुझ एक के ही भक्ति करते थे। और कोई चित्र ही न था। बाप याद दिलाते हैं। अभी तुम कितने तमोप्रधान बुद्धि बन पड़े हो। अभी तुम्हारी याद अव्यभिचारी रहनी चाहिए। एक बाप से ही सुनना है। कोई2 फिर संगदोष में आकर औरों का भी सुनते हैं। आधा कल्प तो वेद–शास्त्र ,ग्रंथ आदि सुनते दुर्गति को ही पाया है। यह भी बाप ही बैठ समझते (समझाते) हैं। बाप कहते हैं अनेक बारी तुमने यह याद की यात्रा की है। नम्बरवार तो हैं ना। सभी एकरस तो याद कर नहीं सकते। टीचर तो फिर भी पुरुषार्थ करावेंगे ना। हरेक सब्जेक्ट में उठाते रहते हैं। मंसा नहीं वाचा वा कर्मणा। मंसा अर्थात् मनमनाभव, तो भी तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। वाचा से भी सभी को नालेज सुनाओ। कर्मणा तो एक/दो की सेवा ,सम्भाल आदि करनी है। बाप समझाते हैं यहां रहने वालों की परवरिश बाहर रहने वालों से होती है। वास्तव में वह कोई देते नही हैं। और ही सौणा लेते हैं। जब चावल–मूठी देते हैं तो समझना चाहिए हम तो शिवबाबा से लेते हैं। बाबा हमारी यह चावल मूठी स्वीकार कीजिये। हम एडवांस में आपको थैंक्स देते हैं। बाप को थैंक्स नहीं कहने का होता है। हम अगर न लें.. तो जमा ही कैसे हो सकता है? नहीं तो जिसको चीज़ मिलती है वह उनको थैंक्स देते हैं। यहां वह बात नहीं। तुमको ही सौणा हो मिलता है। इसलिए तुम ही थैंक्स देते हो। यह बड़ी ही समझ की बात है। इसलिए ऐसा कोई न समझे कि हम देते हैं। यह खयाल आने से ही पापात्मा बन पड़ते हैं। ईश्वर से तो लेते हैं ना। बाप आप हमारी दो मूठी लेते हो यही आप की शुक्रिया है , जो फिर आप हमको भविष्य में सेफ्टी से देंगे। बाप जैसे कि अमानत लेते हैं। फिर सौणा कर देने लिए। बहुतों को अहंकार रहता है। हमने इतना दिया है। ज्ञान तो पूरा है नहीं। समझो शिव जयंति पर भेज देते हैं तो कहना चाहिए बाबा कृपा कर (आप) स्वीकार करना। आप तो रिटर्न में देने वाले हो। देने साथ थैंक्स भी देना चाहिए। बाबा आप लेते हो फिर जमा करते हो। यह राज़ समझने कारण गिनती करते रहते हैं हमने इतना दिया है। अरे, तुम तो बाबा पास अमानत रखते हो सौणा करने लिए। अगर तुम्हारा हम जमा न करें तो मिलेगा कहां से? अहंकार आने फिर ताकत कम हो जाती है। देहाभिमान की टेव बहुत पड़ी हुई है। समझते हैं हमने बहुत दिया है। अब जास्ती नहीं देंगे। ऐसे बहुतों का अंदर में चलता है।

बाप तो दाता देने वाला है ना। लेने वाला नहीं है। अमानत बच्चों के लिए ही लेते हैं तो वहां कितना सौणा कर देते हैं। प्वाइंट्स कितनी अच्छी2 है। उपर जाना बहुत नाजुक है। ऐसा न हो और ही घाटा पा लें। देहीअभिमानी बनने में ही मेहनत लगती है। सहज भी बहुत है। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। बाप कहते हैं अब नई दुनियां में चल वहां वाह2 शरीर लेना है। यहां कोई से भी दिल न लगाओ। देह सहित देह के कोई भी सम्बंधी याद न रहे। कितना क्लीयर है। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। बाबा ने समझाया है वह है भक्ति की गीता। ज्ञानमार्ग के कोई शास्त्र होता नहीं। ज्ञान अभी तुम सुनते हो। फिर प्रारब्ध में चले जाते हो। अभी सुना सो सुना। फिर शास्त्र रहती नहीं है। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि गीताएं छपती ही आती हैं। उनको कहा जाता है भक्तिमार्ग। यह क्लीयर कर लिखना चाहिए। झूठे अक्षर कहने से मनुष्य बिगरते हैं। बोलो यह है भक्तिमार्ग की गीता, जो जन्मजन्मांतर पढ़ते आते हैं। ज्ञान जन्म–जन्मांतर नहीं सुना जाता। ज्ञान से तो सदगति हो जाती है। ज्ञान मिलेगा ही तब जबकि सदगति होने को होगी। बाकी हो जाती है भक्ति। मनुष्य शास्त्रों (को) ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। इससे मेरे साथ कोई भी मिल न सके। मैं तो जब आउं तब ही आकर रास्ता बताउं। माया ने सभी को अंधा बना दिया है। आत्मा में ज्ञान का तीसरा नेत्र है ही नहीं। अभी तुम्हारी आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। अपन को आत्मा समझे तो ज्ञान की धारणा भी हो। देहाभिमान में आने से ही बड़े विकार आते हैं। देहीअभिमानी बड़े ही शांत रहेंगे। उल्टा–सुल्टा कुछ भी बोलना नहीं। स्वधर्म में टिकना है। तुमको अभी नालेज मिलती है। आत्मा है ही शांत स्वरूप। शांति कोई कहां से मिलेगा नहीं। आत्मा को तो शरीर द्वारा कर्म करना ,पार्ट बजाना ही है। अभी अशांति है ;क्योंकि रावणराज्य है। अभी आत्माभिमानी बनने से तुम आधा कल्प शांति में रहते हो। देहाभिमानी बनने से अशांति शुरू हो जाती है। इस समय 100परसेंट देह अभिमानी बने हैं। अभी तुम बच्चों को देहीअभिमानी बनने में कितनी मेहनत लगती है। बाप समझाते हैं हर 5000वर्ष बाद तुम देहीअभिमानी बनते हो। अपना राज्यभाग लेते हो। यह एक अंतिम जन्म देहीअभिमानी जरूर बनना है। सन्यासियों के लिए बाबा ने समझाया है पहले जब वह सतोप्रधान थे तो जंगल में रहते थे। उनको रोटी वहां पहुंचाते थे। राजाएं भी उन्हों को रोटी पहुंचाते थे। अभी वह ताकत न रही है तो कुटियाओं से चले आये हैं। अभी कुटियायें खाली पड़ी हैं। अभी कहते हैं गवर्मेंट को कि हमने घर–बार छोड़ा है। फिर अंदर घर में क्या आय बैठे हैं। गवर्मेंट को भी पता थोड़े ही पड़ता है। पत्थर बुद्धि मनुष्य हैं ना। रावण के गवर्मेंट तो सभी रावण सम्प्रदाय ही ठहरे। विषस वर्ल्ड है ना। कहा जाता है वैश्यालय। भारत का नाम भी खराब इन्होंने ही किया है। यूं तो है ही वैश्यालय ; परंतु उनमें भी फिर यह अति वैश्यालय है। नाम बदनाम करने वाले हैं। कालेजों में ,स्कूलों में कुमार–कुमारियां कितनी गंदे होते रहते हैं। यहां भी चलते कुमारियों पर राहू का ग्रह बैठ जाता है। कोई तो ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। जैसे उस लड़ाई में ट्रेटर बनते हैं ना। यहां भी ऐसे ही हैं। ईश्वर का बन फिर माया तरफ चले जाते हैं। ट्रेटर उनको कहा जाता है जो बाप का नाम–बदनाम करते हैं। बहुत खबरदारी रखनी चाहिए। हम बाबा का नाम बाला करें। बाप कितना समझाते हैं सबका कल्याण करो। योग अक्षर कहने से किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। याद में रहना है। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम बाप का वर्सा पा लेंगे। यह(ल0ना0) बाप का वर्सा है ना। बाप स्वर्ग रचते हैं। यह स्वर्ग के मालिक बने हैं तो वर्सा लिया ना। पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इस समझाने में कोई तकलीफ नहीं है। यह तो बहुत सहज है। सिर्फ निश्चय बुद्धि में हो। बाप से बहुत लव चाहिए। कई तो बाप को याद भी नहीं करते हैं। बाप तो इतना देते हैं जो उनको कब छोड़ा नहीं जा सकता। चकमक है ना। सूई बिल्कुल प्योर हो जाती है तो एकदम चिपक जाती है। उनको छुड़ाया नहीं जा सकता। इतना लव न होने के कारण छोड़कर जाते हैं। वह सब धंधे क्या हैं? कुछ भी नहीं।

नम्बरवन धंधा तो यह है जो कोई विरला व्यापारी करे। देही अभिमानी होने से फिर कब छोड़ नहीं सकते। विचार किया जाता है कितना उंच बाप है ,बात मत पूछो। सारे विश्व को प्राण दान देते हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति में ले जाते हैं। ऐसे बाप पर कितना लव होना चाहिए। कितनी नम्रता होनी चाहिए। यहां तो और ही उनको बहुतों से नम्रता से चलना पड़ता है। उनको तो कुछ होता नहीं है। पत्थर मारते हैं, गाली देते हैं शिवबाबा को कुछ हो न सके। वह तो बेसमझी से गाली दे देते हैं। बाकी उनको कुछ होता नहीं है। निराकार को गाली कैसे देंगे? नाम–रूप वाला को गाली मिलेगा ना। यह बाबा की नालेज कितनी वंडरफुल और अति सहज है। कहते बच्चे तुम हर 5000वर्ष बाद यह पार्ट बजाते हो। सभी मनुष्य मात्र पार्टधारी हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप समझाते हैं यह नहीं। इनमें कोई ज्ञान थोड़े ही था। कोई2 समझते हैं इनको कोई गुरू से ज्ञान मिला है। अगर गुरू होता तो फिर वह बहुतों को देवे ना। एक को सिर्फ छिपा कर थोड़े ही देंगे। ऐसे बहुत समझते हैं इतने गुरू किये हैं शायद पिछाड़ी वाले गुरू से ....वा शक्ति मिली है। तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों, परंतु जबकि ऐसे मीठे बनो। बहुत मीठे ते मीठा वर्सा मिलता है। विश्व की बादशाही देख दिल ही खुश हो जाती है मैं यह बनूंगा। फिर अंत मते सो गते हो जावेंगे। एक मिसाल बताते हैं ना। एक ने कहा मैं भैंस हूं, मैं भैंस हूं। तो उनको यह एकदम पक्काह हो गया। बोले मैं भैंस हूं, इस खिड़की से कैसे निकलूं? अभी तुम बच्चे समझते हो शिवबाबा को याद करना है। याद करते2 बाबा पास चले जावेंगे। बाप से हमको यह वर्सा मिलता है। तब ही बाबा ने कहा था प्रभात फेरी आदि में भी इस ल0ना0 का चित्र उठाओ। हम यह वर्सा ले रहे हैं। विश्व में शांति का राज्य था। इनका राज्य था ना। वहां तो है ब्रह्म में शांति। यह है विश्व में शांति का राज्य। कितना समझाते रहते हैं। बहुत थोड़े भाग्यशाली निकलते हैं। फिर भी पुरुषार्थ बहुत करना चाहिए। कल्प2 राजधानी स्थापन होती है। तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाबा जानते हैं कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है ऐसा ही करते हैं। फिकरात की बात ही नहीं। बाकी बच्चों को फिकरात है यह याद की यात्रा में। यह बहुत उंची सीढ़ी है। बहुत गुप्त मेहनत है। याद करना ही माया भुला देती है। योग नहीं तो ज्ञान भी कम है। ज्ञान तो बिल्कुल ही सिम्पुल है। मूल बात है बाप को याद करो और कराओ। पिछाड़ी में थोड़े ही टाइम मिलेगा। अभी ही पुरुषार्थ करना है। बहुतों को तो बैज लगाने (में) भी लज्जा आती है। यह नहीं समझते हैं यह तो ज्ञान की तलवार है। कोई को भी इस पर समझा सकते हैं ;परंतु लगाते ही नहीं हैं। बैज को देखे आपे ही पूछेंगे यह कहां से मिला है। तुम किस संस्था के हो? बोलो हम ईश्वरीय संतान हैं। बेहद के बाप से यह वर्सा स्वर्ग का ले रहे हैं। बाप को याद करने से ही पाप कट जावेंगे। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। कितनी सहज बात है। अच्छा, रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। <u>रही हुई प्वाइंट–</u> सभी कहते हैं हम ल0ना0 बनेंगे। बन दिखाओ। रजिस्टर रख दिखाओ। विजयमाला में आना कोई मासी का घर नहीं। कोई विरले हैं तो(जो) अपन पर ध्यान रखते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। बाप का कहना भी मानते नहीं। पुरुषार्थ करते2 पिछाड़ी में अडोल अवस्था में रह सकेंगे। इसलिए माला भी बहुत थोड़े की ही बनती है। अभी कैरेक्टर्स का रजिस्टर भी ले आना चाहिए। रोज कितना समय पढ़ा ,कितना समय याद में रहा, क्या खाया–पीया। चार्ट रखने में अपनी चलन की बड़ी सेफ्टी है। कितना समय खाता हूं। कितना समय सोता हूँ, क्या2 करता हूं। सब लिखना चाहिए। (10/2/68 प्रातः)

यहां बाप ओमनीप्रजेंट है। सेकंड में आ सकते हैं। तुमको समझना चाहिए बाबा इसमें बैठा ही है। करनकरावनहार है ना। करते भी हैं कराते हैं। बच्चों को डायरैक्शन भी देते हैं और करते भी रहते हैं। क्या2 कर सकते हैं, क्या न कर सकते हैं। बैठ हिसाब निकालो। इस शरीर में क्या2 कर सकते हैं। वासना ले सकते हैं? वासना क्या चीज है? क्या कर सकते हैं, क्या न कर सकते हैं। अच्छा। (11/2/68प्रातः)